ISSN 2455-5169

संजय वर्मा 'दृष्टी" की कविताएं

संजय वर्मा 'दृष्टी"

चाँदनी

दरवाजे की चौखट
तुम्हारे इंतजार की गवाह देती
निहारती निगाहे
जब तुम्हारी
चौखट की ओट से
लगता सांझ को इंतजार हो
रोशनी का
राह पर गुजरते अहसास
दे जाते तुम्हारी आँखों मे
एक अजीब सी चमक
पूनम का चाँद
देता तुम्हारे चेहरे पर
चांदी सी रोशनी
तुम्हें देख लगता
चांदनी शायद इसी को तो कहते
दरवाजे बंद हो तो
लग जाता चंद्रग्रहण
लोग कहाँ समझते
चाँदनी का महत्व
करवाचौथ
शरद पूर्णिमा
तीज
ईद
चाँदनी बिना अधूरे
वैसे तुम भी हो
रातों में चाँद की चाँदनी का
खिलने का इंतजार
फूल भी करते
जैसे उपासक करते तुम्हारे
चौखट पर खड़े रहने का
इंतजार
वसंत की बयार ही कुछ ऐसी
जो चाँदनी की रोशनी में
कर जाती मदहोश।

बिटियाँ की बिदाई

नन्हें दोनों हाथों से
कंकू के छापे
अपने पिता को लगाती
फिर लिपट के रोती
विदा होते ही सबकी आँखों की
कोर में आँसू आ ठहरते
और आना/जल्द आना
सुखी रहना
कह ढुलक जाते आँसू
रिश्ता
आँखों और आंसुओ के
बीच मन का होता
जो डबडबाए नैना

अंदर से मन को रुलाता
पिता से पूछ कर बिदा होती
लगने लगता आसुंओं का
बांध फूट गया हो
सारी बातें
बचपन से लेकर बड़े होने की
घूमने लगती आँखों के सामने
बिदा के बाद
घर आने पर
खाना बिना आसूं गिरे खाया हो
ये कभी भी ना हुआ
दर्द का सच
पिता कुछ ज्यादा ही महसूस करता
रोता मन किसे कहे
बिटियाँ की बिदाई का दर्द
कंकू के छापे
जिन्हें देखकर
आँसुओं से डबडबाने
लगते सूने नयन

सुरक्षा की मदद

डरी -डरी सी दहशत से भरी जिन्दगी
पग -पग पर भय से भरी जिन्दगी
मुड -मुड सी पलट से भरी जिन्दगी
सूनी राहों पर दबोची जा रही जिन्दगी
हैवानियत से सनी जा रही जिन्दगी
हर चौराहों पर अब चीख रही जिन्दगी
चीखों को रोकों जरा हैरान है जिन्दगी
दुष्कर्मियों पर कसों फंदा रो रही जिन्दगी
बलात पीड़ित की सिसकती रही जिन्दगी
सुरक्षा की सबसे मदद मांग रही जिन्दगी
कलयुग भी हैरान देख ये दुःख भरी जिन्दगी
गुहार किससे करे ढूंढ़ रही आंसू भरी जिन्दगी
स्तब्ध है सारी दुनिया देख लाचार भरी जिन्दगी
बेटियों की ये दशा कहाँ गई सुरक्षा भरी जिन्दगी
कड़ी सजा मिले ये इंतजार कर रही जिन्दगी
बिना भय के रह सके दुआ मांग रही जिंदगी

नयन

नीर भरे नयन
पलकों पर टिके
रिश्तों का सच
बिन बोले कहते
यादों की बातें
ठहर जाते है पग
सुकून पाने को
थके उम्र के पड़ाव
निढाल हुए मन
पूछ परख रास्ता
भूलने अब लगी
राहें इंतजार की
रौशनी चकाचोंध
धुंधलाए से नैंन
कहाँ खोजे आकृति
जो हो गई अब
दूरियों के बादलों में
तारों के आँचल में
निगाह से बहुत दूर
जिसे लोग देखकर
कहते वो रहा चाँद

खत

खत रुला भी सकता
यादें जुड़ी हो
खत कोई ऐसे ही नहीं होते
बोल दिया यानि
एक से सुना दूसरे से निकाल दिया
विचारो से शब्दों का ऐसा सम्मोहन

जिसे हजारो साल बाद भी पढ़ों
तो लगे जैसे आज की बात हो
मृत्यु से परे शब्द
इसलिए तो अमर है
शब्दों को जन्म देते
कलम
और कागज
प्रेम का खत
प्रेयसी लिफाफे के किनारों पर लगे गोंद को
अपने होठो से चिपकाती
वो बात इलेक्ट्रॉनिक दुनिया में कहाँ
खत संदूको /किताबों में
ईश्वर की तरह पूजे जाते
आखिर प्रेम ही के ढाई अक्षर
ता उम्र साथ रहते
और दिल के कोने में
प्रेम का भी मकां रहता

संपर्क :

125 शहीद भगतसिंग मार्ग
मनावर जिला-धार, म.प्र.
antriksh.sanjay@gmail.com